वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2021

हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा

मिथ्या विश्वासों का फैलता मायाजाल

घमण्डी जन के लिए नेचर में भलाई के सब दरवाज़े बन्द हैं

विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थ परायण मनुष्यों के जीवन में अंतर

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी लिखते हैं

शुभ संग्राम

देश विदेश के समाचार

देवात्मा फरमाते हैं :-

"मेरे पास जो जन रहते हैं, वह अपने भीतर कितनी ही उच्च शक्तियों के न रखने के कारण मेरे लिए हानिकारक बनते रहे हैं, ऐसी उच्च शक्तियों में एक सम्मान भाव से शून्य होना है। सम्मान भाव एक फीलिंग है, वह एक शक्ति है कि जिस से कोई जन किसी और वजूद की परवाह करता है। एक जन अपने मां-बाप के लिए सम्मान भाव रखता है, दूसरा घृणा करता है। जिस पहलू में कोई अस्तित्व सम्मान का पात्र है, नेचर तुम से चाहती है कि तुम उसे सम्मान दो, तुम्हारा घमंड टूटे और तुम में नम्रता आवे। बेहतरी आने के लिए हृदय में नम्रता के आने की नितांत आवश्यकता है। जैसे आटे में पानी डालने से नरमाई आती हैं, तब ही उसकी रोटी बनती है, सूखे आटे की रोटी नहीं बनती, वैसे ही हृदय दीन हो, नम्र हो, तो उस का भला हो सकता है। तुम "मैं" को जन्म काल से ही साथ लेकर आए हो। तुम में "पर" कहीं है ही नहीं। इसलिए कोई ऐसे साधन होने चाहिए जिनसे "मैं" पर चोट लगे और वह कुछ घटे, तब तुम्हारे लिए धर्म का रास्ता खुल सकता है, वरना नहीं।

क्या तुम्हारे भीतर सम्मान का भाव है? यह एक ऐसी शक्ति हैं, जो कि आत्मा को बेहतर बनाती है। यूं तो एक बंदर भी सलाम कर देता है, परन्तु सम्मान भाव हाथ उठाने का नाम नहीं है। किसी जन की कोई सच्ची खूबी देख कर उसके आगे दिल का झुकना सच्चा सम्मान भाव है। मैं एक एक सेवक के बाप के लिए भी सम्मान का भाव रखता हूं। भाव अंदर की चीज है जिस से परिचालित होकर कोई जन सम्मान का प्रकाश करता है। यह भाव मनुष्य को बेहतर बनाता है। डर से परिचालित होकर प्रणाम या सलाम करना सम्मान का भाव नहीं है। सम्मान का भाव वह है जिससे आत्मा सचमुच नम्र होता है। गुरू की इज्जत क्या हुई जब हम गुरू के वचन को पढ़ना ही नहीं चाहते, गुरू के पास आना ही नहीं चाहते। यदि तुम यह कहते हो कि मुझे गुरू के पास जाने की क्या आवश्यकता है, मुझे सब कुछ आता है, तो यह तुम्हारे घमंड का प्रकाश है, हकीकत यह नहीं है। सम्मान भाव से शून्य होकर मनुष्य दूसरे के लिए अनुचित रूप से कष्टदायक प्रमाणित होता है, उसका अपमान करता है। नेचर चाहती है कि जो कोई सम्मान का पात्र है तुम उसे सम्मान दो। यदि तुम उसे उचित सम्मान नहीं देते, तो अनुचित कष्ट पहुंचाते हो। यह कर्जा है जो अदा करने की चीज़ है। सच्चे सम्मान भाव से परिचालित होकर यदि सम्मान के पात्र वजूद का सम्मान किया जावे, तो उसके आत्मा में बेहतरी आती है, यदि ऐसा ना किया जाए तो आत्मा में बेहतरी नहीं आएगी। लालच और डर से परिचालित होकर जो कुछ होता है, उससे आत्मा का कुछ कल्याण नहीं होता। मेरी छवि और मेरी पुस्तकों की एक जन यह इज्ज़त करता है कि सफर में आप रेल के बेंच पर बैठता है और उसे जूतों में फेंकता है कैसा शर्मनाक कर्म है!"

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 3
मार्च – 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा

यह शब्द मनुष्य जगत के शिरोमणी, मनुष्य जाति के सरताज, विकास क्रम के अद्वितीय आविर्भाव देवात्मा ने फरमाए थे।

"हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा" या हम इन्तज़ार करेंगे। परम पू० भगवान देवात्मा ने 13 सितम्बर 1927 (जब अभी मेरे जैसे पैदा भी नहीं हुए थे) को दुपहिर के समय, श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी, श्रीमान लाला जानकी दास जी और बख़शी रतन चन्द जी जौहर को सम्बोधन करते हुए यह शब्द कहे थे। गुरू महाराज हित अनुरागी होकर जिस प्रकार अपने लासानी मिशन को संसार के चारों कोनों में फैलाना चाहते थे, शत: शत: आत्मिक अन्धकार और पाप में मरती हुई रूहों का भला करना चाहते थे, उसको अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी न होता हुआ देखकर, उनके नुक्स वा अभावों को देखकर, अति दुखी, परेशान वा लाचार होकर यह शब्द कहने के लिए मजबूर हुए और होते रहे। गुरू महाराज एक ओर अपने लासानी रूप और मानवता में अपना उच्चतम स्थान देख रहे थे, अपनी देव ज्योति वा देव तेज की क्षमता को देख रहे थे, दूसरी और वह अपने अद्वितीय देव प्रभावों को उचित मात्रा में प्राप्त करने, उनको दूसरे अधिकारी आत्माओं तक, उनके परम हित के लिए पहुंचाने वाले योग्य जनों का, अपने कर्मचारी जनों का घोर अकाल देख रहे थे, तब हित अनुरागी की अथाह तड़प, उनको ऐसा कहने के लिए बार बार बेबस कर रही थी।

बेशक उस समय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज तो देवात्मा सत्गुरू की किसी अंश प्रसन्नता पाकर, अपना जीवन सफल कर परलोक सिधार चुके थे, परन्तु फिर भी जहां तक अनुमान है, श्रद्धेय भाई अमर सिंह जी, श्री कनल जी, श्रद्धेय भाई मोहन देव जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहारवाला, स्वामी गोविन्द राम जी और तीन चोटी के कर्मचारी, जिन्हें गुरू महाराज सम्बोधन कर रहे थे, वह तो वर्तमान थे। उनका जो जीवन स्तर था, उन्होंने गुरू का कारज करके जो जीवन सफल किया, उसका मुकाबला करने का भी कोई साहस नहीं कर सकता। परन्तु उनके संग्राम से, उनके तप और त्याग से, उनके गुरू कारज सम्बन्धी उच्च फलों से, गुरू महाराज अति निराश, दुखी और बेहद परेशानी वा पीड़ित रहते थे। जिसको हम सुख अनुरागी अदना आत्मा समझ कर भी अनुभव नहीं कर सकते।

हम इतना तो अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि गुरू महाराज 1927 में अपने मिशन में दर्जनों उच्च कर्मचारी और योग्य जनों की वर्तमानता में इस प्रकार दुखी और निराश थे तो आज अपने अद्वितीय मिशन की दुर्दशा देखकर, उनके घोर दुख और उत्पीड़न का क्या हाल होगा।

इसी घोर दुख, तड़पन वा निराशा का ही कारण था, कि गुरू महाराज के देव लोग गमन करने पर, उनके द्वारा पैदा किया समाज का समूह जगत, उनकी हिदायत के अनुसार उनकी अर्थी के पीछे शामिल होकर यह भजन गाने के लिए मजबूर हुआ था: -

"हमने तुम को नहीं पहचाना,
हमने तुमको नहीं पहचाना,
हम है नीच सुखों के दास,
तुमरा उच्च लोक में वास
हमरे लिए सम्भव हो किस विध,
रूप तुम्हारा सन्मुख लाना।"

यह एक ठोस हक़ीक़त है, जो उस समय के महारथी यह वाक्य उच्चारन करने के लिए मजबूर थे। हम आज के महा नीच, दुष्ट, महा अपराधी अन्धे, अति अयोग्य वा भृष्ट जन, किस तरह सोच सकते हैं कि हमने गुरू महाराज के रूप को पहचान लिया है। हक़ीक़त यह है कि आज भी उन्हें पहचानने वाला कोई नहीं। उनका प्रकृत रूप देखने वाला कोई नहीं। यदि हम उनका अद्भुत रुहानी रूप देखने के ही पूर्ण अयोग्य है, तो हमारे लिए उनका कोई कारज करना, उनकी महिमा और देव प्रभाव फैलाना उनके कारज पर बलिहार जाना और मरती रूहों को बचाना पूर्ण असम्भव है। इसीलिए उनके मिशन के कारज पर पूर्ण सन्नाटा छाया हुआ है, बल्कि मिशन विरोधी शक्तियों की जो कि नेचर के नियमानुसार ज़रूरी था, के भयानक नाच की भरमार वर्तमान है।

देवात्मा के रूप को पहचाने बिना, कोई उनके साथ सम्बन्ध जोड़ने में सफल नहीं हो सकता, उनके प्रभाव प्राप्त नहीं कर सकता, उनके प्रभावों को दूसरों तक पहुंचाने का गुरू मिशन का अद्वितीय कारज नहीं कर सकता। जब गुरू महाराज ने उपरोक्त दुख वा निराशा भरे शब्द फरमाए कि "हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा" उस समय गुरू महाराज का यह मतलब था कि उन्हें उस समय तक इन्तज़ार करना पड़ेगा, जब तक उन्हें सच्चे अर्थ में पहचानने वाले जन पैदा नहीं हो जाते।

गुरू महाराज ने उक्त वाक्य फरमाने के बाद अपने बहुमुल्य रोशनी का दान भी दिया था कि जिससे उक्त प्रकार के लोग पैदा हो सकते हैं, जिनकी गुरू महाराज को इन्तज़ार है।

गुरू महाराज ने फरमाया कि "हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा कि कब कोई ऐसे जन पैदा होते हैं, कि जिनके निज के साधन चलें, वह अपने खिलाफ सोचें और लिखें।"

इस फरमान में गुरू महाराज ने तीन उच्च कर्मचारियों के आगे यह सत्य साफ कर दिया कि मेरा काम केवल और केवल वह जन कर सकते हैं, जो तीन शर्तें पूरी कर सकते हैं।

1) वह निज के साधन लगातार कर सकते हों अर्थात् वह देव प्रभाव पा सकते हों। जैसे पानी के बिना कोई इन्सान खेती नहीं कर सकता उसी प्रकार

देव प्रभावों के बिना कोई कर्मचारी न अपना जीवन बचा सकता है न औरों तक कोई प्रभाव पहुंचाकर उच्च परिवर्तन का काम कर सकता है।

2) कर्मचारियों, गुरू मिशन में काम करने वालों का सबसे बढ़कर ध्यान अपने जीवन की ओर जाना चाहिए। वह अपने विरुद्ध सोच सकते हों, देख सकते हों। मनुष्य नीचता का पुतला है। जिस वर्कर को अपना पाप परायण, नीचता का पुलंदा रूप नज़र नहीं आता वह उस पर विचार वा चिन्तन को अपना लक्ष्य नहीं बना सकता और वह गुरू महाराज का कारज नहीं कर सकता।

3) तीसरी अहम अवश्यकता अपनी नीचता पर निरन्तर लिखने का साधन करने की है। जो अपनी नीचता पर निरन्तर सारी उमर लिखने को अपना नहीं सकता, वह कभी भी अपने महा भयानक अंह अनुराग का बोधी नहीं हो सकता। जिसको अपने अंह अनुराग का गहराई में बोध नहीं, वह गुरू महाराज का कोई ठोस कारज नहीं कर सकता। वह अपने जीवन को और गुरू मिशन को भी बेपनाह हानि पहुंचा सकता है जिसका शब्दों में पूरा पूरा ब्यान नहीं हो सकता।

अपनी नीचता के अति विशाल और गहरे क्षेत्र में गुरू की ज्योति में प्रतिदिन लगातार विचार किए बिना और अपनी नीचता को साफ साफ लिखने का लगातार सारी उमर साधन किए बिना किसी भी वर्कर को: -

1) अपने प्रकृत अंह का, अपनी मनमुखता का महा भयानक रूप तनिक भी साक्षात दिखाई नहीं दे सकता। वह अपने भीतर और बड़ी बड़ी योग्यताएं रखकर भी घोर मिथ्या के अन्धकार में रहने के लिए बेबस रहता है। वह जो कुछ नहीं, अपने आपको वैसा समझता है और वास्तव में वह जो कुछ है, उसे दिखाई नहीं देता।

2) उसको देव प्रभाव प्राप्त नहीं हो सकते। देव प्रभावों तक रसाई हासिल करने की शर्त पूरी नहीं कर सकता।

3) उसको गुरू का रूप परम महान कहकर भी, वास्तव में उसका कुछ अंश भी दिखाई नहीं देता। गुरू को असल रूप में कुछ भी नहीं देख सकता।

4) उसका गुरू के साथ कोई सम्बन्ध ही स्थापन नहीं हो सकता, वह उनसे जुड़ने का नियम ही पूरा नहीं कर सकता।

5) उसको अपने जीवन का सत्य लक्ष्य ही दिखाई नहीं देता।

6) वह विद्या, धन, सम्पति, मान, यश, पद उपाधि, सम्मान और सुख आदि के ही पूर्ण अधिकार में रहकर अपना समस्त जीवन, देवात्मा की शरण के महा सौभाग्य को पाकर भी बर्बाद करने के लिए लाचार रहता है।

इसलिए देवात्मा ने श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी जैसी हस्ती के सामने, जिनके बारे श्रद्धेय कनल जी ने फरमाया था, "एक धर्मबल हज़ार कनल पैदा कर सकता है, परन्तु हज़ार कनल एक धर्मबल पैदा नहीं कर सकता"। अर्थात उक्त शर्तें पूरी करने वाले जनों की मिशन को अवश्यकता है। जब तक ऐसे जन नहीं मिलेंगे देवात्मा ने फरमाया कि "हम इन्तज़ार करेंगे"।

गुरू महाराज ने जगह जगह यही फरमाया है कि हमें श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसे जनों की अवश्यकता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने उपरोक्त नियम निरन्तर अपने जीवन में पूरे किए थे। वह आखिरी सांस तक हररोज़ एक डेढ़ घण्टा अपने नीच जीवन पर लिखने का साधन, अन्य साधनों के अतिरिक्त पूरा करते थे। तभी वह गुरू मिशन का कारज करने के योग्य हुए। वह आप तो उच्च जीवन के शिख़रों को छू गए, वह गुरू मिशन के लिए 20 या इससे भी अधिक कर्मचारी पैदा कर गए। वह अपने संग्राम से 100 के करीब स्थानों पर साधनों की प्रक्रिया जारी कर गए।

आज भी गुरू मिशन को उक्त शर्तें पूरी करने वाले श्रद्धावान और त्यागी जनों की अतिशय अवश्यकता है। गुरू मिशन का सूरज जैसा प्रकाश आज एक मामूली दीए की तरह टिमटिमा रहा है। उसके अन्दर के तेल और बाती लोप हो रहे हैं। मिशन बुरी तरह बर्बाद हो रहा है। इसलिए गुरू मिशन के लिए आज भी उक्त नियमों को पूरा करने वाले सौभाग्यवान जनों की गुरू महाराज को व्याकुलता से इन्तज़ार है।

आज भी जो लोग गुरु मिशन को सच्चे दिल से आगे ले जाने के वलवले रखते हैं, कुछ जोशीले नौजवान वा बड़ी उमर के कुछ लोग हैं जो ऐसे अरमान रखते हैं, जो बड़े होनहार प्रतीत होते हैं, उन्हें जागना चाहिए और गंभीरता से सोचना चाहिए कि गुरू महाराज कैसे जनों का अपने मिशन के लिए इन्तज़ार कर रहे हैं? हमारी गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा और कृतज्ञता का प्रबल तकाज़ा है कि हम गुरू की इस आन्तरिक परेशानी और निराशा को, उनकी इन्तज़ार को खत्म करने के लिए उक्त नियमों की पूर्ति में आगे बढ़कर जुट जाएं, ताकि किसी अंश हम गुरू मिशन के योग्य बन सकें। अपने सर्व्वोच्च भले और गुरू महाराज की सच्ची खुशी के किसी अंश भागी बन सकें।

नेचर का नियम पुकार पुकार कर कह रहा है कि इस इन्तजार ने तो खत्म होना ही है, क्यों न इसे खत्म करने के अधिकार और सौभाग्य को हम पा सकें। गुरू की कृपा अब किसी सौभाग्यवान पर हो सके।

"असूल की बात यह है कि काम करने वाले यह सोचें कि मैं अपने लिए नहीं आया, समाज के लिए आया हूं, देवात्मा की इच्छा पूरी करने के लिए आया हूं, दूसरों के हित के लिए आया हूं।"

(बलदेव सिंह)

आदमी का अंहकार उसको दृष्टि से अन्धा, मति से भ्रम पूर्ण और गति से रुकावट में डाल देता है। अच्छे अच्छे, सफल और समझदार लोग अंहकार के कारण गल्त निर्णय ले लेते हैं। अंहकार चिन्ता को प्रभावित करके क्रिया को दोष पूर्ण बना ही देता है। अंहकारी व्यक्ति हर वह काम करना चाहता है, जिससे उसके अंहकार को और बल मिले। उसकी स्थितियों से निपटने से ज़्यादा रूचि अपनी अंहकार पूर्ण प्रतिष्ठा में रहती है।

मिथ्या विश्वासों का फैलता मायाजाल

आज 18 फरवरी के दैनिक भास्कर में यह समाचार पढ़कर बड़ा दुःख और हैरानी हुई कि तेलेगांना के चीफ मिनिस्टर चन्द्रशेख़र के 67 वें जन्म दिन पर उनके समर्थक और तेलगांना सरकार में मन्त्री के तलसानी श्री निवास ने देवी येलम्मा तल्ली को ढाई किलो सोने की साढ़ी चढ़ाई जिसकी कीमत 1.15 करोड़ रुपये है। हमारे देश की त्रासदी है कि जहां गरीब भूख से मर रहे हैं, वहां देवियों को करोड़ों रुपये की भेटें चढ़ाई जाती हैं। एक 2 मन्दिर में प्रतिदिन का चढ़ावा लाखों रुपये का है। यह चढ़ावा चढ़ाने वाले गरीब लोग नहीं बल्कि करोड़ों और अरबोंपति होते है। उनको न तो गरीबों की भूख दिखती है, न सर्दी में ठिठुरते उनके शरीर दिखाई देते हैं। इन मन्दिरों के द्वारा हमारे देश पर करोना में आई आपदा पर कितनी मदद की है, उसकी कोई ख़बर कम से कम मैंने तो नहीं पढ़ी। जहां सिक्खों की ओर से, गुरूद्वारों के द्वारा लंगर लगाए गए, जहां बिना किसी भेद भाव के अधिक से अधिक लोगों का पेट भरा गया। साधारण नागरिकों ने भी अपनी अपनी हैसीयत के अनुसार इस आपदा-ग्रस्त लोगों की राशन देकर, पैसे देकर मदद की। अगर एक 2 मन्दिर के एक वर्ष की आमदन गरीबी दूर करने में लगाएं तो शायद हमारे देश की गरीबी ही दूर हो जाए। सोनू सूद यदि मज़दूरों को घर पहुँचाने के लिए ट्रांसर्पोट का प्रबन्ध न करते और इसके स्थान पर मन्दिरों में भेंट चढ़ाते तो क्या देश की कुछ भलाई होती? कुछ वर्ष पहले अमिताभ बच्चन ने एक मन्दिर में 50 लाख रुपये भेंट दिए, उस समय उनको मन्दिर के बाहर रोटी को तरस्ते गरीब दिखाई नहीं दिए। मिथ्या विश्वासों ने अन्धकार की पट्टी बांध दी है।

आजकल हरिद्वार में कुंभ का मेला चल रहा है। जिसके लिए सरकार के प्रबन्ध करने में करोड़ों रुपये खर्च होते है। कुंभ में स्नान करने का पंडितों ने विशेष महत्व बताया है। इसमें केवल अनपढ़, गरीब लोग ही नहीं जाते बल्कि पढ़े लिखे लोग भी खुशी खुशी जाते हैं। यह विश्वास लेकर जाते हैं कि कुंभ में स्नान करने से सब पाप क्षमा हो जाते हैं। जैसे पाप कपड़ों पर लगी धूल है, जो पानी से धुल जाएगी। यदि कोई कहे कि पाप धुलने की चीज़ नहीं तो वह आपको नास्तिक कहकर घृणा करेंगे। कोई प्रश्न नहीं करता कि क्या स्नान के बाद कोई बेईमान ईमानदार बना? कोई मांसाहार के पाप से मुक्त हुआ? क्या किसी का स्वार्थ, ईर्षा द्वेष से जो घरों में नर्क है, वह दूर हुआ? प्रश्न करने की क्षमता को तो पण्डितों और पुरातन ग्रन्थों ने समाप्त कर दिया है। गंगा किनारे बैठे पण्डित ही आने वालों को खूब लूटते हैं। उनकी लूट में सुधार हुआ, जो सदा पवित्र नदी में प्रतिदिन स्नान करते हैं। पाप क्षमा करने का विश्वास और पाप और बेईमानी करने के लिए मार्ग खोल देता है, क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि वह फिर स्नान करके पापों से मोक्ष प्राप्त कर लेंगे।

इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपात-स्थिति में भी इतने लोग एक ही पानी में स्नान करते हैं, वह पानी भी साफ नहीं। इतने आदमी उसको और भी गन्दा कर देते हैं और वही पानी घर में लेकर आते है और उसके छिड़काव में घर पवित्र करने का दम भरते हैं और यह भी विश्वास है कि मरने वाले आदमी के मुंह में अगर गंगा जल डाल दिया जाए तो वह मुक्त हो जाता है। गंगा स्नान के विषय में भगवान

देवात्मा फरमाते हैं :-

"गंगा की धार हज़ारों वर्ष से बह रही है। हिमालय पर्वत भी हज़ारों वर्ष से खड़ा हैं परन्तु भारतवासी हिन्दुओं की दशा क्या है? यह हिमालय और हिमालय पर वर्तमान कितने ही तीर्थों के दर्शन भी करते रहे, सैकड़ों, हज़ारों और कभी कभी लाखों की संख्या में मिल कर गंगा स्नान भी करते रहे; परन्तु इनके इस दर्शन और स्नान ने उनकी अवस्था को केवल यही नहीं, कि कुछ भी उच्च नहीं किया, किन्तु उनकी लगातार अवनति और दुर्गति के पथ से भी उन्हें कभी न रोका। और इसीलिए एक ऐसा चिन्ताशील जो भारत की महा शोचनीय अवनति को देख सकता हो, जिस का हृदय भारतवासी हिन्दुओं की दुर्दशा को सम्मुख लाकर बिलबिला उठता हो, गंगा के तट पर बैठकर और ठण्डी स्वास भरकर यह कहने के बिना नहीं रह सकता, कि हे हिमालय, हे गंगा! तुम्हारे और उपकार हमारे जाति जनों के लिए कितने ही अधिक क्यों न हों, परन्तु हिन्दू जाति की अवनति से रक्षा करना तुम्हारे लिए असंभव था। जिस जाति के मनुष्यों में जातीयता का कोई बन्धन नहीं, जो जानते तक नहीं, कि जातीय भाव किसे कहते हैं, जो जीवन प्रद सत्य धर्म का ज्ञान तो कहीं रहा, यह भी अनुभव नहीं कर सकते, कि संसार के धन, ऐश्वर्य, बल और वीर्य के विचार से उच्च होना क्या, और नीच होना क्या, सांसारिक उन्नति के लिए दलबद्ध होना क्या, और एक जाति बनना क्या! जो जातीय उन्नति और जातीय अवनति के प्रकृत अर्थ को भी नहीं समझते, जो अपने आत्मा की सच्ची रक्षा करना तो एक ओर अपने शरीर की प्रकृत रक्षा के उपाय भी नहीं जानते, जो दिनों दिन निर्धन और निरूपाय होकर नाना प्रकार के दुःख पा रहे हैं, नाना प्रकार की कुरीतियों और कुसंस्कारों के दास बनकर विविध प्रकार के क्लेश भोग रहे हैं, वह तुम्हारे जल और स्नान से बच नहीं सके। हाय! यह अपनी इस महा भयानक अवस्था को भी नहीं जानते और नहीं देखते! परन्तु जो देखता है, और उसे अनुभव करके दुखी और व्याकुल हो सकता है, उस पर अपने जातिजनों की यह महा दुखदाई अवस्था जो कुछ प्रभाव डालती है, वह केवल अनुभव करने की वस्तु है, वर्णन करने की नहीं।"

-सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

घमण्डी जन के लिए नेचर में भलाई के सब दरवाज़े बन्द हैं

जब कोई मनुष्य अपने आप का इतना अनुरागी या प्रेमक हो जाता है कि वह अपनी विविध बातों को झूठ-मूठ बढ़िया जानता और समझता है, तब उसका अपने सम्बन्ध में इस प्रकार का मिथ्या विश्वास या पक्षपात घमण्ड कहलाता है।

वह अपने में वास्तविक गुण या योग्यता न रख कर भी उसका झूठ-मूठ अपने में होना प्रकट करता है।

वह अपनी किसी योग्यता व कुशलता पर सत्य की सीमा से बढ़कर भरोसा करता है।

वह अपनी किसी अयोग्यता को अयोग्यता अनुभव नहीं करता, किन्तु इस के उल्ट फूलता और अकड़ता है। किसी की अपेक्षा आप हीन होकर भी उसे अपनी अपेक्षा अच्छा अनुभव करता है।

वह अपनी किसी बुराई के देखने के अयोग्य होकर भी किसी और में झूठ-मूठ भी कोई बुराई देखने व वर्णन करने व सुनने के लिए तैयार रहता है।

वह किसी की आप कोई झूठी निन्दा करके व किसी और से सुनकर प्रसन्न होता है।

घमण्डी जन अपने विषय मे किसी सत्य को मिथ्या और किसी मिथ्या को सत्य देखता है।

वह दूसरों के श्रेष्ठ और उच्च गुणों के सच्चे सौंदर्य और उनकी सच्ची महिमा को देखने के योग्य नहीं रहता।

वह नाना विषयों में मिथ्या-दृष्टा और मिथ्या-विश्वासी होकर भी अपने आप को सदा ठीक ठाक विश्वास करता है और अपने से भिन्न मत व विश्वास रखने वाले को भ्रान्त, भृष्ट और गुमराह समझता है।

वह बलशाली होकर अपने जैसा विश्वास या मत न रखने वालों को नीच घृणा करता है, उन पर अत्याचार करता है और उन्हें नाना प्रकार से सताता है, यहां तक कि उनकी हत्या तक कर देता है।

वह अपनी अपेक्षा किसी विषय में किसी और जन को श्रेष्ठ या बढ़िया समझ कर कष्ट बोध करता है।

वह औरों की झूठी अप्रशंसा करके खुश होता है।

वह जिन जनों को नीच घृणा करता है, उनसे फट जाता या दूर हो जाता है। उनसे परे-परे रहता है। उनका मुंह न देखना, उनसे कोई बातचीत न करता उन पर कोई मिथ्या कलंक लगाना, उनकी कोई उचित सहायता न करना बल्कि उनकी हानि करना व किसी और से कराना भी घमण्डी जन के लिए अनिवार्य हो जाता है।

भगवान् देवात्मा फरमाते हैं कि घमण्ड का प्रबल अधिकार रखने वाले जन के लिए नेचर ने भलाई के सब रास्ते बन्द कर दिए हैं। उसने ऐसे जन की जिन्दगी पर यह मोहर लगा दी है कि वह बेहतर न बन सके।

"यूं तो सब नीच अनुराग और नीच घृणाएं आत्मा के लिए हानिकारक हैं परन्तु जो नीच अनुराग आत्मिक कोढ़ का काम करता है वह अहं (घमण्ड) है, जो सच्चे या झूठे अवगुणों का औरों के पास प्रकाश करके विष खाने और औरों के भीतर भी विष संचार करने का काम करता रहता है।

यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि किसी की बुराई को भी तब तक किसी और पर प्रगट न करो, जब तक तुम्हारा यह उद्देश्य न हो कि मैंने इनकी इस बुराई को दूर करना है। वरना आदमी में ख़्वामख़्वाह घमण्ड पैदा होता है कि वाह! मैं कैसा अच्छा हूं और यह कैसा खराब है।

तुम सोचो कि जैसे किसी गल्ती को औरों के पास बताने को दिल चाहता है, वैसे ही क्या अपनी किसी गल्ती को भी किसी और के पास बताने को दिल करता है?

यदि कोई सच्ची गल्ती भी बिना उचित कारण के किसी और को बताई जाए, तो उस में भी न समाज का, न गुरू का, न उस जन का भला है। ऐसा जन सेवक

रहने के भी योग्य नहीं परन्तु कर्मचारी तो वह किसी प्रकार से भी नहीं रह सकता। याद रखो! कि दीन हो कर ही भलाई का रास्ता खुलता है। घमण्डी के लिए भलाई के सब रास्ते बन्द हैं।

"घमण्डी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझ में भी कोई आत्मिक रोग है, वह यह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूं, वह ठीक जानता हूं। वह सत्य को लात मारता है। वह हर समय झूठ में रहना चाहता है। उसकी बुराई पर यदि कोई चोट लगाई जाए तो वह सांप की मानिन्द फन निकालता है। घमण्डी जन के लिए इस दुनिया व अगली दुनिया के लिए पतन ही पतन है।"

भगवान् देवात्मा में सब प्रकार के सत्य और शुभ के लिए पूर्ण अनुराग और सब प्रकार के मिथ्या और अशुभ के लिए पूर्ण घृणा भाव वर्तमान है, इस लिए नेचर के अटल नियम के अनुसार उनके आत्मा में ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा और घमण्ड भाव के बीज भी जन्मकाल से ही नहीं आए।

श्रद्धा और सम्मान के भाव घमण्ड भाव के विरोधी भाव हैं। भगवान् देवात्मा में श्रद्धा और सम्मान के भाव पूर्ण रूप से वर्तमान थे, जिसका पता नीचे लिखी कुछ घटनाओं से लगता है-

भगवान देवात्मा के बागीचे में गयाद्दीन नाम का एक माली काम करता था। वह अपने काम को चाहे कोई देखे या न देखे, बहुत लगाव और निष्ठा से पूरा करता था। भगवान् देवात्मा उसकी इस कर्त्तव्य-परायणता से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने एक अवसर पर उसको फूलों का हार पहनाया। उसके माथे पर तिलक किया और उसको कुछ उपहार दिया और मुक्त-कण्ठ से उसके काम की सराहना की। किस कदर दीनता!

सन् 1928 के महोत्सव पर भगवान् देवात्मा ने अपनी महा-सभा के आरम्भ में नेचर को सम्बोधन करके फरमाया था कि इस पृथ्वी की तुलना में एक राई के दाने की तो फिर भी कुछ हकीकत है, परन्तु इस अति महान्, अति विशाल नेचर की तुलना में मेरी अपनी हस्ती की क्या हक़ीकत है? उन्होंने बताया कि उनकी अपनी हस्ती की उत्पत्ति भी इसी नेचर से है और उसकी रक्षा और सच्ची सफलता भी एकमात्र इसी नेचर के सत्य नियमों पर निर्भर है।

कई अवसरों पर ऐसा हुआ है कि अपनी श्रद्धा के योग्य माता जी के दर्शन करते ही भगवान् के भीतर का सम्मान का भाव इस जोर से उत्तेजित हो गया है कि वह फौरन ही मधुर दीनता और श्रद्धा से भर कर जमीन पर साष्टांग प्रणाम करने और अपनी माता के चरण छूने के लिए मजबूर हो गए हैं। उन्होंने इस बात की कतई परवाह नहीं की कि ज़मीन पर चटाई या दरी बिछी हुई नहीं है। उस समय उनके सामने केवल प्यारी माता की उपकारी हितकारी तस्वीर होती थी और इसके सिवाए कुछ नहीं।

एक बार पूजनीय भगवान् को स्वप्न में एक श्रद्धेय महात्मा के दर्शन हुए कि जिनके लिए उनमें गहरा सम्मान वर्तमान था। भगवान् के भीतर फौरन यह भाव पैदा हुआ कि वह इन महात्मा के चरणों को छूकर प्रणाम करें, परन्तु इसके साथ ही फौरन उनके दिल में यह ख्याल गुजर गया कि मैंने अपने हाथ नहीं धोए हैं। अब यद्यपि भगवान् सफ़ाई की मूर्ति हैं, तो भी सम्मान के निहायत पवित्र और उच्च भाव ने उनके दिल और दिमाग पर इस कदर प्रबल अधिकार प्राप्त किया हुआ था कि उन्होंने हाथ धोए और इस महात्मा के चरणों को छूआ।

अपने किसी बड़े-से-बड़े विरोधी जन के गुण को सामने लाकर भगवान् उसके उस गुण की सराहना करने के बिना नहीं रह सकते थे। आर्य समाज के लाला मुंशी राम (स्वामी श्रद्धा नन्द) ने भगवान् की पवित्र ज़ात पर कई झूठे और बे-बुनियाद अभियोग लगाए थे, परन्तु भगवान् ने अपने अनुयाइयों के सम्मुख कितनी ही बार उनके इस गुण की प्रशंसा की है कि वह अपने गुरूकुल के लिए चन्दा इकट्ठा करने का काम बहुत कुरबानी और जोश से करते रहे हैं। इसी प्रकार लाला हंसराज भूतपूर्व प्रधानाचार्य डी० ए० वी० कालिज लाहौर की भगवान् ने उनकी विद्या विषयक सेवाओं की बहुत सराहना की थी।

भगवान् उन तमाम हितकर सुझावों को चाहे उनके तुच्छ सेवकों की ओर से भी क्यों न दिए जाएं, पूरे ध्यान से सुनते हैं। उन्होंने श्रीमान् देवत्व सिंह जी से उनके आत्माओं में काम करने के तज़ुरबों को बहुत ध्यान से सुना। एक छोटे से बच्चे की बात को भी भगवान झुक कर और अपने कान को उसके मुँह के पास ले जाकर बड़े ध्यान से सुनते थे।

भगवान के एक कर्मचारी बीमार थे। हमदर्दी से भर कर भगवान् उनके कमरे में गए। उन्होंने देखा कि उनके पास पूरा बिस्तर नहीं है और उनके कमरे में सामान भी अस्त-व्यस्त अवस्था में पड़ा है। भगवान् ने स्वयं उस कर्मचारी के बिस्तर को ठीक तरह से बिछाया। अस्त-व्यस्त सामान को ठीक अवस्था में रखवा। बीमार कर्मचारी की चारपाई को एक ऐसे स्थान पर रखवा कि जिस से वह खिड़की में से कमरे से बाहर का दृश्य देख सके और अपने दिल को बहला सके।

देव समाज के एक माननीय कर्मचारी की एक रिश्तेदार स्त्री को पर्वताश्रम सोलन में रहने के लिए एक कमरे की आवश्यकता पड़ी। यह कमरा उन दिनों रहने के लिए इस्तेमाल नहीं होता था, बल्कि इसमें कुछ सामान रखवा जाता था। भगवान् ने अपने कीमती समय के कई घण्टे अपने आदमियों से इस कमरे की सफाई करवाने में लगवाए। उन्होंने स्वयं भी कमरे की सफ़ाई में भाग लिया।

श्रीमान् मंगलदेव जी बहुत कुरबानी से भगवान् के मिशन की सेवा करते थे। उनकी सेवा से प्रभावित होकर भगवान् ने उनके पांव धोए और अपने हाथ से उनको खाना बना कर खिलाया।

श्रद्धेय डाक्टर कुमारी प्रेमदेवी जी देव धर्म मिशन की अनुरागी सेवाकारी थीं, नौजवानी की आयु में ही उनका देहान्त हो गया। पूजनीय भगवान् नंगे पांव श्मशान भूमि में गए और श्रद्धेया जी की अस्थियों और राख की ढेरी के पास खड़े होकर फ़रमाया कि यदि तुम किसी राजा की महारानी होती, तो भी मैं तुम्हें इस प्रकार सम्मान देने न आता। परन्तु तुमने जो देख धर्म मिशन की सेवा की है, उसके लिए मैं तुम्हें हृदय-गत भावों से सम्मान देने आया हूँ। कैसी अद्भुत दीनता!

जब तक अहंकार है, तभी तक अपने दोषों का अस्वीकार है

हम मानें न मानें, पर यह सत्य है कि हम अपनी कई कमजोरियों को स्वीकार नहीं करते। यह अस्वीकृति ही हमारी अशांति का कारण बन जाती है। कई दफा हम दूसरों पर टिप्पणी करते हैं कि क्या जानवर जैसा व्यवहार कर रहे हो। दरअसल में सभी लोग कहीं न कहीं भीतर से पशु होते हैं। कुछ अपनी पशुता को भीतर रोक लेते हैं तो कुछ बाहर प्रकट कर जाते हैं, लेकिन दोनों ही स्थिति में मनुष्य अपनी पशुता को स्वीकार नहीं करता। हमारे भीतर यह कौन है जो हमें स्वीकार नहीं करने देता? यह है हमारा अहंकार। जैसे ही हम अपने भीतर की पशुता को स्वीकार करते हैं, सबसे पहली चोट हमारे अंहकार को लगती है। यह अहंकार ही हमें समझाता है कि हम पशु जैसे नहीं हैं, यह जो बुराई है यह हमारे भीतर दूसरों के कारण है, वरना हम तो श्रेष्ठ ही हैं। जिस दिन हम अपने काम, क्रोध और लोभ को स्वीकार करते हैं, उसी दिन हम इनसे पार जाने की संभावना का निर्माण भी कर लेते हैं। पार जाने का अर्थ है काम, क्रोध और लोभ में मुक्त हो जाना। अपनी कमजोरियों में गहरे उतर जाने से हमारा और उनका परिचय होता है। देख तो हम लेते हैं, पर स्वीकार नहीं करते और जैसे ही स्वीकार किया, बस हम अपनी बुराइयों से मुक्त हुए। दूसरे हमें जब कोई टोकें तो एकदम खारिज न करें, थोड़ा धैर्य से विचार करें कि जो टिप्पणी हमारी कमजोरियों पर की जा रही है, उसे भीतर जाकर कहां पकड़ा जाए। पकड़ में जरूर आएगी, क्योंकि भीतर कहीं न कहीं है जरूर यह कचोटती है। इसके लिए थोड़ी देर प्राणायाम-ध्यान का अभ्यास जरूर करें। यही वह मार्ग है जो हमें अपने भीतर ले जाकर कुछ चीजों की खोज में मदद करेगा।

विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थ परायण मनुष्यों के जीवन में अंतर

जैसे विष या मिट्टी खाने में मनुष्य का शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ता है और दूध फल आदि के ठीक सेवन से यह बेहतर बनता है, वैसे ही स्वार्थपर्ता का जीवन व्यतीत करने से मनुष्य का आत्मिक जीवन बिगड़ता और नष्ट होता है और विविध संबंधों में कई प्रकार से निष्काम सेवाकारी बनने से उसका जीवन उसकी अपनी योग्यता के अनुसार बेहतर बनता और उन्नत होता है। इस विषय में भगवान देवआत्मा के दो वचन नीचे दिए जाते हैं :-

नेचर का यह अटल नियम है कि जो मनुष्य स्वार्थ परायण होते हैं, वह नेचर के विकास के अटल नियम के अनुसार दिनों-दिन आत्मिक पतन की ओर जाते हें।

तुम इस तत्व को अच्छी तरह जानों और पहचानों कि तुम्हारे आत्मा की रक्षा और उन्नति औरों की निष्काम भलाई पर निर्भर करती है।

उपरोक्त दोनों वचन बहुत अच्छी तरह इस सच्चाई को प्रगट करते हैं कि मनुष्य के लिए स्वार्थपर्ता का जीवन पतनकारी और विनाशकारी है और निष्काम भलाई का जीवन विकासकारी और कल्याणकारी है।

क्या भौतिक जगत, क्या उद्भिद जगत, क्या पशु जगत और क्या मनुष्य जगत के घटिया और बढ़िया दर्जे के अस्तित्व अपने-अपने रूप ।और अपने-अपने फलों से उपरोक्त सच्चाईयों को ढंके के चोट से प्रगट कर रहे हैं?

नेचर में स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवन में जो अलग-अलग प्रकार के कई लक्षण या फल पैदा होते हैं, उनमें से कुछ लक्षण या फल नीचे दिए जाते हैं।

(1) प्रत्येक मनुष्य स्वभावत: सुख का प्रबल आकांक्षी है और दुख से घबराता है। परन्तु स्वार्थ परायण मनुष्य के लिए बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि वह अपने किसी सेवा के बदले जो सुख चाहता है, उसके बदले वह धनमान, इज्जत व पद आदि की आकांक्षा करता है, वह सब कुछ औरों के हाथ में है। उसकी खुशी का सामान अधिकतर उसके अपने अस्तित्व से बाहर के सामानों और बाहर के अस्तित्वों में है और उसका वह सुख उनके चले जाने, पत्नी या संतान के मर जाने, किसी पद के छिन जाने, किसी की ओर से अपमानित होने से नष्ट हो जाता है। परन्तु इसके विरुद्ध जिस मनुष्य को दूसरों की निष्काम सेवा या भलाई में सुख मिलता है, उसका सुख उसके बाहर के जनों के हाथ में नहीं है, बल्कि उसके अपने आत्मा के भीतर ही है। श्रद्धा, कृतज्ञता, दुख निवारण या अभाव निवारण आदि सात्विक भावों से परिचालित होकर जो जिन किसी की भलाई करता है, उसके बदले में वह सुख लाभ करने के लिए किसी और अस्तित्व का मोहताज नहीं है, बल्कि उसके सुख का सामान उसके अपने अन्दर ही है। इसी प्रकार स्वार्थ परायण मनुष्य के दुख का सामान उसके अपने अन्दर है और निष्काम सेवाकारी मनुष्य के दुख का सामान अधिकतर और नीच आत्माओं के व्यवहार में है। जो स्वार्थ परायण मनुष्य ईर्ष्या या घमंड या मोह या क्रोध के कारण दुख पा रहा है, उसे कोई दूसरा मनुष्य चाहे कुछ भी तकलीफ न दे तो भी अपनी ऐसी बुरी प्रकृति के कारण अपने आप में स्वयं दुखी रहेगा और उस दुख से अपनी जीवनीशक्ति का नाश करता रहेगा। वह अकेला होकर भी उच्च शांति लाभ नहीं कर सकेगा और इसके विरुद्ध जो जन निष्काम सेवाकारी है, वह स्थूल शरीर छोड़ने पर नीच आत्माओं की पहुंच से ऊपर चला जाएगा और इसलिए उनके बुरे बर्तावों

के दुख से सुरक्षित हो जाएगा। ऐसी अवस्था में वह अपने उच्च भावों के कारण बहुत उच्च शांति कि अवस्था में रहेगा। स्वार्थ परायण मनुष्य के सुख का सामान अधिकतर औरों के हाथ में है और निष्काम सेवाकारी जन के सुख का सामान अधिकतर उसके अपने ही हाथ में है और दुख का सामान औरों के अन्दर है कि जिस दुख से वह समय आने पर नीच आत्माओं से जुदाई की हालत में अवश्य मोक्ष पा सकता है।

(2) प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है और मरना नहीं चाहता, परन्तु स्वार्थी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम के विरुद्ध जाने के कारण अपनी उक्त जीने की आकांक्षा को ठीक तरह पूरा नहीं कर सकता और वह स्वाभाविक आयु से पहले ही इस दुनिया में या अगली दुनिया में मर जाता है। निष्काम सेवाकारी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम को पूरा करने के कारण अधिक से अधिक काल तक जीने के योग्य बन जाता है। ऐसा जन यदि किसी कारण से इस दुनिया से जल्दी अपने स्थूल शरीर को छोड़ने के मज़बूर हो तो उसके बाद सिवाय किसी विशेष दुर्घटना के उच्च प्रकार का सूक्षम शरीर लाभ करके चिरकाल तक जीने के योग्य बन जाता है।

(3) स्वार्थी मनुष्य के जीवन का दायरा बहुत तंग होता है और निष्काम सेवाकारी जन के जीवन का बहुत अधिक होता है। जो जन औरों को हानि पहुंचाकर जीना चाहता है, उसे जहां कहीं अपने से अधिक शक्तिशाली अस्तित्वों से वास्ता पड़े, वहां पर वह उसे खत्म कर डालेंगे और ऐसा अस्तित्त्व मरने के बाद किसी अच्छे लोक में नहीं जा सकेगा और उसके जीवन का क्षेत्र दिनों-दिन तंग होता जाएगा और आखिरकार वह इसी हालत में चलते-चलते बिना आई मौत का शिकार हो जाएगा। परन्तु इसके विरुद्ध जो मनुष्य निष्काम सेवाकारी होता है, उसके लिए क्या इस दुनिया में और क्या अगली दुनियां में सेवा के लिए जो क्षेत्र होता है, वह बहुत बड़ा और असीम होता है। संतान अनुरागी के लिए वह जन सीमित हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीना चाहता है और उनके न रहने से उसकी सेवा और क्षेत्र का सामान समाप्त हो जाता है, परन्तु दूसरे की निष्काम उच्च सेवा करने के आकांक्षी जन के लिए ऐसे जन प्रत्येक स्थान पर वर्तमान हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीता रह सकता है।

(4) स्वार्थी मनुष्य अपने आत्मिक जीवन के विचार से दिनों-दिन अधिक से अधिक रोगी, पागल, दुखिया और दुर्बल होता चला जाता है और आखिकर अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के विचार से पूर्णत: खत्म हो जाता है। परन्तु परोपकारी जन दिनों-दिन अधिक से अधिक ज्योर्तिमय, सुन्दर और बलवान, इसलिए श्रेष्ठ सुखों का भागी होता चला जाता है और अधिक से अधिक देर तक जीने के योग्य हो जाता है।

(5) स्वार्थी मनुष्य मरने के बाद ऐसे जनों में जाकर रहने का अवसर पाता है कि जो उसकी तरह स्वार्थी होते हैं, इसलिए ऐसी अवस्था में वह जहां अपने नीच भावों की आग में जलता रहता है, वहां दूसरे नीच अस्तित्वों के भयानक बुरे व्यवहारों से भी कई प्रकार के अनुचित दुख पाता रहता है। निष्काम सेवाकरी जन मरने के बाद ऐसे मनुष्यों में जाकर वास करने का अधिकारी होता है कि जो परोपकारी होते हैं और इसलिए ऐसा मनुष्य अपने उच्च जीवन की अमूल्य बरकतों से मालामाल होता है, वहां औरों के श्रेष्ठ जीवन के उच्च व्यवहारों से भी बहुत बड़ा लाभ उठाता है।

(6) स्वार्थी मनुष्य इस दुनिया में एक ऐसा बुरा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके निकट के संबंधियों और क्या अन्य जनों की तबाही में सहायक

होता है और परोपकारी जन ऐसा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके संबंधियों और कया अन्य जनों की भलाई में सहायक बनता है और इस प्रकार स्वार्थी मनुष्य को मरने के बाद औरों की ओर से बुरी आशीष मिलती रहती है और परोपकारी जन को शुभ आशीष।

(7) स्वार्थी जैसे और किसी जन का सच्चा शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, वैसे ही अपना भी शुभचिंतक नहीं हेाता और नहीं हो सकता, किन्तु वह जैसे औरों का दुश्मन होता है, वैसे ही अपना भी शत्रु होता है, परन्तु इसके विरुद्ध निष्काम सेवाकारी जन जैसे औरों का भला चाहता है और करता है वैसे ही अपना भी भला चाहता और करता है। अनेक अवस्थाओं में वह अपने शत्रुओं के लिए भी हितकर प्रमाणित होता है, जबकि इसके विरुद्ध स्वार्थी मनुष्य अनेक अवस्थाओं में अपने उपकारियों को भी हानि पहुंचाने से नहीं रुकता।

(8) जहां स्वार्थी मनुष्य को अपने मरने के समय कई प्रकार के अनुचित दुख उठाने पड़ते हैं और शोक से हाथ मिलाने पड़ते हैं, वहां परोपकारी जन को ऐसे दुख नहीं उठाने पड़ते बल्कि वह शांति के साथ इस अधम दुनिया को छोड़ कर किसी उच्च लोक में जाता है।

तब प्रिय पाठकगण, आप देखें कि स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवनों के नतीजें में कितना जमीन-आसमान का अन्तर है। जो जन इस सच्चे अन्तर को भगवान देवात्मा की देवज्योति में देखने की योग्यता रखते हों, उनके लिए इस बात की नितांत आवश्यकता है कि वह यदि अभी तक स्वार्थपर्ता का जीवन व्यतीत करते है, तो वह शीघ्र स्वार्थ परायण अवस्था से उद्धार लाभ करें और विशुद्ध परोपकार अनुरागी बनने के लिए सच्चा फिकर और संग्राम करें और समय रहते-रहते परोपकार के जीवन की उच्च अवस्था को लाभ करके और भगवान देवात्मा के साथ उन्नतशील सम्बंध में बंध कर आत्मिक भलाई का मार्ग खोल सकें, वरना ठीक समय व्यतीत हो जाने पर उनकी कुछ पेश नहीं जाएगी और उनके लिए केवल हानिकारक दुखों की आग में जल-जल कर खत्म होना बाकी रह जाएगा।

(सत्यदेव संवाद 11 जून, 1940)

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी लिखते हैं :-

"आपके पवित्र श्रीचरणों में आकर मुझे क्या कुछ मिला है, क्या कुछ मिल रहा है और आगे क्या कुछ मिलने की आशा है, प्रत्येक अंग में किस कदर मेरे पाप और नारकीय बन्धन कटे हैं और उनके महा दुखदाई, विषैले और कड़वे फलों से मेरा उद्धार हुआ है; और उनके स्थान में अपने परम पवित्र और स्वर्गीय सूत्र में बांधकर जो आपने मेरा परम हित साधन किया है, मेरे हृदय की मैल को धोकर जो उच्च ज्योति, आत्मिक-ज्योति, परम हितकर ज्योति..... अमृतरस लाभ करने का मुझे अधिकारी बनाया है, मेरे लिए जो महा अमूल्य और अनन्त बरकतों का भण्डार खोला है, उसको मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। एक-एक समय आपकी पवित्र ज्योति के दृश्य को देखकर, आपके परम कल्याणकारी उपकारों को सामने लाकर..... समझ नहीं सकता कि कैसे उसको वर्णन करूं, किस प्रकार उसकी महिमा गाऊँ, कैसे उसके लिए आपका धन्यवाद अदा करूं, उसके बदले में क्या आपकी सेवा कमाऊँ, क्या कुछ इस संसार में से आपकी भेंट धरूं, किस उच्च से उच्च विधि के साथ आपकी पूजा करूं। इसलिए कई बार भीतर ही भीतर

कृतज्ञता, महिमा गान, सेवा आदि के पवित्र भावों से भरकर आपके महा कल्याणकारी, पवित्र और परम हितकर स्वर्गीय रूप के सामने अपने आपको झुकाकर भक्ति - भाव में डूब जाता हूँ, और भीतर और बाहर से, "धन्य गुरू, धन्य देवगुरू, परम हितकर देवगुरू"..... के शब्दों की गूँज निकाल कर और भी धन्य - धन्य हो जाता हूँ। आपने मुझे क्या बना दिया है, मैं अति तुच्छ शक्तियां रखने वाला इस को अभी बहुत थोड़ा देखता हूँ..... मैं मुर्दा था, आपने मुझे जिन्दगी दी, मैं पागल था, आपने मुझे होश दे दी, मेरे दिमाग को ठीक कर दिया। मैं अन्धा था, आपने मुझे आँखें दी, मैं गूंगा था, आपने मुझे ज़बान दे दी, मैं बहरा था, आपने मुझे कान दिए, मैं लंगड़ा था, आपने मुझे हाथ और पाँव दिए.... शरीर के विचार से मैं अपने बहुत प्यारे माता - पिता के हां जन्म पाकर इस संसार में प्रकट हो चुका था..... परन्तु भीतर का चैतन्य - पुरूष (अर्थात मेरा आत्मा) असल में मुर्दे की न्याईं पूर्णतः शून्य (अर्थात बोध विहीन) पड़ा था। मेरी समझ और सोच - विचार की शक्तियां और मेरे पास के रुपये - पैसे से जितना यत्न होता था, वह केवल शारीरिक - सुखों को लाभ करने के लिए तथा पाश्विक - वासनाओं को तृप्त करने के लिए ही होता था.....। मैं अपने आपको विनाश करने वाले, पाप की अति भयानक अग्नि में जलाने वाले अनुचित कार्य करता था, अनुचित व्यवहार करता था। मुझे यह सब कुछ करके कोई दुःख व क्लेश नहीं होता था। दिनों दिन मेरे ऊपर पाप की मैल चढ़ती जाती थी और मैं मुर्दे की न्याईं उसके नीचे दबता जाता था। आपके श्रीचरणों में आने से, आपके जीवन - स्त्रोत से मेरे मुर्दा आत्मा में जान आ गई। मैं मुर्दा जिन्दा हो गया। मैले और पाप कर्मों से मुझे उसी प्रकार दुःख होना आरम्भ हुआ, जिस प्रकार ज़िन्दा शरीर में आग के लग जाने से दुःख, बेचैनी और जलन अनुभव होती है। मेरे भीतर मैले और विनाशकारी नीच भावों और कर्मों से घृणा बढ़ती गई, मैंने अपने जीवन में आकाश - पाताल का अन्तर देखा। जहां पहले अन्धेरा था, वहां मैंने उच्च - ज्योति का प्रकाश देखा। जहां रात थी, वहां मैंने दिन चढ़ा हुआ देखा। जहां दुखदाई नरक था, वहां मैंने रसदायक और अमृत - दायक स्वर्ग देखा। मेरे इरादे बदल गए, मेरे सम्बन्धी बदल गए, मेरी ज़िन्दगी की सारी चाल बदल गई। मेरी ज़िन्दगी का सारा तख्ता पलट गया। बाहर से मोटी नज़र रखने वाले "मनुष्य - देहधारी पशुओं" के लिए मेरी शक्ल वही रही, परन्तु असल में मेरी और सारी काया पलट गई। मैं मानता हूँ कि अन्तर - दृष्टि रखने वाले पुरुषों की नज़र में मेरी मुर्दा, अति भयानक, अति बढ़ी हुई नापाक और गन्दी, अपने और दूसरों के लिए महा भयानक और दुखदाई फल उत्पन्न करने वाली तस्वीर बदल कर ज़िन्दा, हरी - भरी, पवित्र बन गई, और अपने तथा दूसरों के लिए बहुत अमूल्य, जीवन - दायक अमृत फल पैदा करने लगी। तब हे मेरे जीवनदाता सतगुरु! इस संसार में मृत्यु के पथ पर ले जाने वाले बहुत नापाक और गन्दे को पाकीजगी और पवित्रता की ओर ले जाने वाले परम हितकर सम्बन्धी, मैं किस जिव्हा से आपको धन्य - धन्य कहूं, क्योंकर (कैसे) आपके गुण गाऊँ, क्यों कर आपकी स्तुति करूं, क्योंकर अपने भीतर के धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों का प्रकाश करूं? आप धन्य हैं! आप धन्य हैं!! आप धन्य हैं!!! आशीर्वाद करें कि मैं आपके श्रीचरणों के अधिक से अधिक निकट होने के लगातार साधन जारी रखकर आपके जीवन - दायक महा हितकर और कल्याणकारी रूप को अधिक से अधिक देख सकूं और अधिक से अधिक उसको अपने चारों ओर प्रकाश कर सकूं।

(2)

"हे भगवन! देवशास्त्र को पाठ करके जहां एक तरफ

उसके तत्व-ज्ञान के सामने हृदय प्रसन्नता की सुगंधिदायक लहरों में चला जाता है तथा आपका ज्योतिर्मय-रूप बहुत प्रभावाशाली मालूम होता है, वहां इसके साथ-साथ यह भाव भी उत्पन्न होते हैं, कि :- 1- बार-बार ऐसे देव-शास्त्र तथा उसके दाता के चरणों में झुकूं तथा उनके पांवों में गिरूं, जिन्होंने बिना किसी कीमत के ऐसे अनमोल रत्न दान दिए है, जिनको लाखों तथा करोड़ों रुपयों में भी कोई राजा-महाराजा पा नहीं सकता, तथा जिनकी तुलना में संसार का सब कुछ, कुछ भी कीमत नहीं रखता। 2-ऐसा दिल चाहता है कि यदि सुनने वाले तत्पर हों, तो उनकी (देव-शास्त्र की) महिमा गाऊँ तथा इसका ब्यान कभी समाप्त न करूं। इसको बार-बार गाता जाऊं तथा न केवल इस देश के व्यक्तियों के सम्मुख, अपितु देश-देश में इसकी महानता की सच्चाई को फैलाऊँ। आत्मिक-अन्धकार में ग्रसित अन्धे लोग, जो बड़ी-बड़ी ईश्वर-रचित पुस्तकों तथा बड़े से बड़े तथाकथित उपास्यों को लेकर भी आप अन्धेरे में ठोकरें खा रहे हैं, तथा औरों के लिए धोखे का जाल फैला रहे हैं, तथा कितने ही अधिकारी आत्माओं को पथ-भ्रष्टता के जाल में फंसा रहे हैं, उनके बंधनों को काटूं, उनकी आँखों को खोलूं तथा उनके सम्मुख आपकी विज्ञान-मूलक सत्य-धर्म शिक्षा का डंका बजाऊँ, कि जिसके आगे कल्पना-मूलक मतों के सारे अनुयाई इस तरह खड़े होने की शक्ति नहीं रखते, जिस तरह सूर्य की ज्योति के सम्मुख चमगादड़ नहीं ठहर सकते। 3-ऐसे प्रचार के लिए मुझे खुद इस शिक्षा के जितने विचार पूर्वक अध्ययन की आवश्यकता है, उसके लिए मैं उचित तथा अनुकूल सामान प्राप्त कर सकूं तथा जो मुझे प्राप्त हैं, उन्हें पूरी तरह काम में ला सकूं। 4-दिन-प्रति-दिन अधिक से अधिक योग्यता प्राप्त करके आपके इस महादान को पाकर हित-परिशोध करने के लिए अधिक से अधिक उत्साहित तथा प्रयत्नशील हो सकूं।

भगवान देवात्मा फरमाते हैं

"नेचर में किसी सत्य का दर्शन करना या सत्य को देखना जैसा की वह है, मनुष्य का बहुत बड़ा अधिकार है। यह अधिकार हरेक मनुष्य को प्राप्त नहीं है। सत्य धर्म के बोध के बिना मनुष्य जीवन निष्फल! सत्य धर्म के बोध के बिना मनुष्य को अपने मुख्य लक्ष्य का कोई बोध नहीं होता। मैं चाहता हूं और बार बार चाहता हूं और व्याकुल होकर चाहता हूँ की मुझे अधिकारी आत्मा मिलें जिनके भीतर मेरी ज्योति केवल एक व दूसरे समय में कुछ काल के लिए ही नहीं किन्तु हर समय लगातार प्रवेश कर सके।"

"अधिकारी आत्मा को देवात्मा की देव ज्योति में यह दिखाई देता है कि उसके शरीर और दिमाग की जो शक्तियां नेचर के विकासकारी विभाग का साथ नहीं देती और सत्य और शुभ की जय के काम नहीं आती, वह उसके नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के कामों में खर्च होकर नेचर के अटल नियमानुसार उसके आत्मिक जीवन को तबाह करती हैं। देवात्मा की देवज्योति में वह इस सत्य को देखता है और अपने भीतर यह भाव उठता हुआ अनुभव करता है कि उसे अपने धन या अपनी सम्पत्ति को या अपने शरीर की शक्तियों को अपनी व औरों की तबाही के काम में और खर्च नहीं करना चाहिए और उन्हें देवात्मा के अद्वितीय जीवन व्रत की सिद्धी के लिए अवश्य अर्पण करना चाहिए और वह पूर्णत: या किसी हद तक अपने इस भाव को पूरा करता है।

मल्लेका जिला सिरसा में हितकर संग्राम

श्रीमान बलबहादुर जी ने स्थानीय सेवकों की सहायता से मल्लेका में 29 जनवरी से 1 फरवरी तक सत्संग की सभाएं कराई।

29.1.2021, शाम 3.00 बजे :- श्रीमान जी ने बताया कि साधारणत: लोग धार्मिक विश्वासों में यक़ीन रखने वाले अपने विश्वास को धर्म समझ लेते हैं। मैं जो यक़ीन रखने वाले अपने विश्वासों को धर्म समझ लिया जाता है। कई धर्म मतों के विश्वासों पर चर्चा की गई। दुनिया में लगभग 40,000 धर्म मत हैं, परन्तु दुखांत यह है, मुश्किल से 40,000 मनुष्य कुछ धर्मवान मिलेंगे। गुरु महाराज फरमाते हैं, कि देव धर्म को मान लेना या किसी और धर्म को मान लेना नहीं। जैसे जैसे मनुष्य को धर्म की समझ आती जाएगी, वा धर्म की प्राप्ति होगी तो वह विविध सम्बन्धों अपने कर्तव्यों को पूरा करने और अपने व्यवहारों में सुधार लाएगा। आम धर्म मतों ने परमात्मा को मानना वा उससे मेल करना ही धर्म बताया है। भगवान देवात्मा ने कल्पित परमात्मा के मिथ्या विश्वासों का भेद खोलकर नेचर-गत सच्चे सम्बन्धियों अर्थात बेजान जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत के सच्चे सम्बन्धियों के साथ धर्म मूलक सद्व्यवहार करने को धर्म बताया है, जबकि दूसरे धर्मों ने सब सम्बन्धों को माया जाल बताया है, उन्हें त्यागने से धर्म आता है, यह विश्वास पैदा किया है। गुरु महाराज ने फरमाया है कि सात्विक भावों के द्वारा उच्च गतियां करके, इन सब सम्बन्धियों के साथ विकासकारी सम्बन्ध बनाना ही धर्म है। इनके विकास में ही मनुष्य का अपना विकास है। नेचर के भीतर धर्म प्राप्ति का यही नियम है। डायनासोर इसलिए ख़त्म हो गए क्योंकि वह और अस्तित्त्वों के विकास में सहायक नहीं थे। बल्कि और अस्तित्त्वों की बर्बादी करते थे। हमारे पारिवारिक जन माया नहीं हैं, सचमुच के अस्तित्त्व हैं। चार धामों की यात्रा को भी धर्म समझा जाता है। ज्यों ज्यों मानव जाति का नैतिक विकास होगा, उसका हृदय विशाल होता जाएगा, और वह सीखता जाएगा। फांसी की सजा कई देशों में समाप्त हो गई है, यह विकास है। विकास नियमानुसार होता है। विज्ञान ने कितने रोगों का ईलाज ढूंढ़ा है और कई रोग ख़त्म कर दिए हैं। सभापति जी ने विज्ञान पर आधारित देव धर्म की कुछ विशेषताएं बताई, जैसे सब प्रकार की मिथ्या विश्वासों से मुक्त करना, आठ किस्म की बुराईयों से बचाना, सम्बन्ध तत्त्व की शिक्षा देना और सम्बन्धों में उच्च मेल पैदा करना, हानि परिशोध के साधन करवाना, स्त्री जाति का सम्मान करना, नैतिक गुणों का विकास करना, यह धर्म के कारज देव धर्म करता है। आख़िर में सरताज सिंह जी की विशेष गतियों की ओर ईशारा किया, उनके प्रति सम्मान पेश किया। देवगुरु भगवान के सच्चे प्रभाव राक्षसी जीवनों को सम्मान योग्य हस्तियां बना देते हैं।

30.1.2021, सुबह 10.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। पहले दो छोटी बच्चियों ने "लोको नीच शक्तियां बुरियां छुरियां मार दियां" नामक भजन का गान किया। यह भजन श्रीमान नेत राम जी का बनाया हुआ है। उनका जीवन जब नीच शक्तियों के हवाले था, तो अपनी नीच रुचियों को पूरा करने के लिए वह अपनी ज़मीन बेचकर यह सोचते थे कि मैं तो रेत बेचकर चांदी ले रहा हूं। 40 एकड़ ज़मीन बेचकर अपनी नीच शक्तियों की तृप्ति में लगा दी। जेवर जो उनके पास थे, अब वह बेचने जा रहे थे, तो खुशकिस्मती से उन्हें माननीय श्रीमान गुरुवन्त सिंह जी

की एक उच्च प्रभावदायक सभा सुनने का मौका मिल गया। ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह धर्म संगत के साथ जुड़ गए। मोटे पापों से बच गए और उन्हीं जेवरों के ब्याज से अपना गुज़ारा करते रहे। कभी समान से कुछ नहीं लिया। यह पक्तियों उन पर सही बैठती हैं :-

"अजब नहीं अकसीर तुम्हारी, ख़ाक को चाहे ज़र कर दे,
फर्श ज़मीं से हम को उठाकर, अर्श ये जलवा गर कर दे"

वह धर्म संगत में आकर बैठ गए। उच्च प्रभावों से फरिश्ता तासीर बन गए। देव प्रभावों को पाकर ही हमें अपना असली रूप नज़र आता है और नीच शक्तियों से निकलने का बल मिलता है।

30.1.2021, शाम 3.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादर सिंह जी। सभा का विषय था माता-पिता-सन्तान का सम्बन्ध। सभापति जी ने बताया कि यह सभा माता पिता के उपकारों और गुणों को स्मरण करने की है। दूसरा जिन कारणों से इस रिश्ते में कड़वाहट आती है, उन पर विचार किया जाए। माता पिता के हमारे ऊपर कम से कम चार उपकार हैं, जन्म दाता, पालनकर्ता, रक्षाकर्ता और शिक्षा दाता। इन उपकारों की व्याख्या की। उन्होंने बताया कि मेरे पिता ने मुझे पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हम बहन भाईयों के लिए पिता जी ने बहुत मेहनत की है। मुझसे उनकी उतनी सेवा नहीं हुई, जितनी होनी चाहिए। फिर औरों को भी अपने माता पिता के उपकार बताने के लिए प्रार्थना की।

गुरूदेव राज जी :- गुरू दर पर आकर माता-पिता के उपकारों का पता लगा है। पिता जी ने बड़े बड़े ढेलों पर कैसे हल चलाया। रात रात को जाग कर फसलों को पानी लगाना। मैं पापी बहुत ही गन्दा बोलता था। गुरू की कृपा से उनके उपकार नज़र आते हैं।

बीबी रेशमा रानी :- ने अपने पिता की बहुत सेवा की। यही सभापति जी ने बताया कि उन्होंने अपने सासू मां की भी बहुत सेवा की। रेशमा जी ने अपनी भाभियों की सेवाओं का भी ब्यान किया।

सभापति जी ने अपने बहन के उपकारों का भी ब्यान किया।

प्रिंसीपल सरताज जी की बहन :- माता जी सुबह 4 बजे उठकर मुझे पढ़ने के लिए उठाती और उस समय चाय बनाकर देती। मुझे झूठ न बोलने की हिदायत देती। अपनी भरजाई के गुणों का वर्णन किया। अपनी पढ़ाई में उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया।

श्रीमान जगीर सिंह जी :- मेरे माता पिता ने मुझे पढ़ाने का बहुत यत्न किया, यदि उनका कहना मानकर पढ़ लिख जाता तो गुरू के कारज में बहुत सहायक हो सकता था। पिता जी के साथ तो मैं कई बार मुकाबला करने लगता था, जिसका बहुत अफसोस है।

31.1.2021 :- इस सभा में श्रीमान बलबहादर सिंह जी ने नेचर के विषय में ज्ञान देते हुए बताया कि भौतिक जगत हमारा बहुत उपकारी है। धर्म का ज्ञान भावों का ज्ञान है। हमारी विद्या और सब प्रगति के मुकाबले सच्चे धर्म का ज्ञान सबसे बढ़कर है। जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, गुरू महाराज की नज़र में वह खुदगर्ज़, कपटी और कमीना कहलाता है।

1.02.2021, सुबह 7.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादर जी। यह सभा भी माता पिता के उपकारों के विषय में थी। उन्होंने बताया कि माता पिता ने अपने खून से हमारे वजूद को सींचा है। मां की कुर्बानी को अनुभव करना हमारी समझ से बाहर है। अपने बचपन में जब कभी मां बिमार होती और मैं स्कूल से आकर बस्ता फेंककर भाग जाता कि मुझे अब दवाई लाने के लिए कहेंगी। एक वह भी बेटा था, जो मां के मना करने पर भी पूरी रात मां के सिरहाने

बैठा रहा, ताकि यदि रात को मां जाग गई, तो उसे उसी समय पानी आदि दे सके। एक इंजिनियर ने अपनी मां के पास ही अपनी चारपाई लगा ली। ऐसा घर मन्दिर होता है।

पिता का भी बच्चों की पालना में उतना ही योगदान होता है। बताया कि कैसे गुरू महाराज ने उदण्ड बच्चों को माता पिता का भक्त बनाया। ग्रन्थों की बेअदबी से माता पिता की बेअदबी ज्यादा खराब है। एक लड़की ने कहा कि मां बाप से लिया जाता है, दिया नहीं जाता। स्वार्थी बच्चों की ही यह बोली हो सकती है। देव प्रभावों में आकर नशुक्रे बच्चे कैसे शुक्रगुज़ार बनकर माता पिता के लिए सेवाकारी बने उनके उदाहरण पेश किए।

श्रीमान गुरूदेव राज जी ने बताया मेरे पिता ने इतनी मेहनत की 3½ एकड़ ज़मीन से 15 एकड़ जमीन बनाई। अब वर्षों से रोज़ाना पिता जी को प्रणाम करता हूं।

श्रीमान जगीर सिंह जी ने बताया कि गुरू की कृपा से अपनी बच्ची की शादी पर कई हानियों से बच गया। माता के ईलाज में बहुत सेवा करने का सौभाग्य मिला। मैं हर रोज़ अपने माता पिता को प्रणाम करता हूं।

यह सारा संग्राम किसी हद तक सफल रहा। धर्म सम्बन्धियों ने अपनी अपनी योग्यता के अनुसार लाभ उठाया और सभापति जी को धन्यवाद दिया। 3400 रूपये दान में मिले।

-एक सेवक

उपलब्धि

थोड़ा सा सम्मान मिला,
पागल हो गये।
थोड़ा सा धन मिला,
बेकाबू हो चले।
थोड़ा सा ज्ञान मिला,
उपदेश की भाषा सीख ली।
थोड़ा सा यश मिला,
दुनियाँ पर हँसने लगे।
थोड़ा सा रूप मिला,
दर्पण को तोड़ डाला।
थोड़ा सा अधिकार मिला,
दूसरों को तबाह कर दिया।
इस प्रकार तमाम उम्र,
छलनी से पानी भरते रहे।
अपनी समझ से,
बहुत बड़ा काम करते रहे।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

देश विदेश के समाचार

1. मुख्य मन्त्री ममता बनर्जी के भतीजे सांसद अभिषेक बनर्जी के घर सी. बी. बाई का छापा, जिसको राजनैतिक षडयन्त्र कहा गया है, क्योंकि बंगाल के इलैक्शन आने वाले हैं।
2. मध्य प्रदेश विधान सभा में एक मन्त्री बिना मास्क के पहुँची और कहा–मैं तो हनुमान चालीसा पढ़ती हूं।(अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप ने भी धर्म का हवाला देकर कहा था कि मास्क मत पहनों, खुद कोरोना के शिकार हुए)
3. अमरीका के वर्तमान राष्ट्रपति बाइडेन के मुख्य चिकित्सक सलाहकार ने कहा है "कोरोना के ख़िलाफ हमने अब तक की सबसे कमज़ोर लड़ाई लड़ी है" अमरीका में 2.89 करोड़ कोरोना से संक्रमित हुए हैं और 5.12 लाख लोगों की मौत हो चुकी है।
4. राजस्थान के सीकर की महापंचायत में बैरीकेड तोड़कर संसद मार्च का ऐलान। टिकैत ने कहा है कि 40 लाख ट्रैक्टर संसद में जाएंगे।
5. किसान आंदोलन में जुड़े "टूटकिट" मामले में गिरफ़्तार 22 वर्ष की पर्यावरण कार्यकर्ता दिशा रवि को 24 फरवरी को जमानत मिली। लोकतन्त्र की यह बहुत बड़ी विजय है। न्यायपालिका पर लोगों का विश्वास बढ़ा है।
6. पीएनबी घोटाले में ब्रिटेन में रहने वाले नीरव मोदी को भारत लाने की अदालती मन्जूरी–याद होगा कि वह 14500 करोड़ का PNB Bank में घोटाला करके देश छोड़ गए थे।
7. घरेलू गैस सिलेंडर के दाम 25 रुपये और बढ़े। एक महीने में सिलेंडर 100 रूपये महंगा हो गया है। चन्डीगढ़ में इसके दाम 825 रूपये हो गए हैं।
8. करोना का कहर फिर बढ़ रहा है, सावधानी बरतें।
9. इंग्लैंड के साथ दूसरे ही दिन भारत ने टैस्ट मैच अपने नाम किया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री– ***Dev Samaj Global****, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts